... परिपक्वता की ओर !

परिचय: पुराना हमेशा के लिये चला गया है और एक नए **आप** ने उसका स्थान ले लिया है। अब आप एक मसीही हो और मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने आपको बचाया और अपना बना लिया. जिस किसी भी अनुभव के कारण आप इस अवस्था/मंच तक पहूँचे हो, यह आपके जीवन का एक बढ़िया और महत्वपूर्ण रुपान्तरण है। हमारी यह प्रार्थना है कि आनेवाले सप्ताहों में आपको जो कुछ भी सीखेंगे वह उस अनंन्त रूपान्तरण के पथ पर निरन्तर आपकी मदद करेगा।

अनुक्रमणिका

अध्ययन १ : मती रचित सुसमाचार प्रश्नावली	**०१**
अध्ययन २ : प्रेरितों के काम प्रश्नावली	**०६**
अध्ययन ३ : हमारे लिये परमेश्वर के स्तर	**१०**
अध्ययन ४ : आपके मसीही जीवन के पहले ४० दिन	**१५**

मत्ती रचित सुसमाचार प्रश्न

इन प्रश्नों के आधार पर आप मत्ती रचित सुसमाचार के अध्ययन का उपयोग अपने जीवन में कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इन प्रश्नों का उत्तर आप अपने मन से दें ।

इस पुस्तक में २८ अध्याय हैं। हर अध्याय को कई वचनों में बाँटा गया है। हर अध्याय पर अनेक प्रश्न पूच्छे गए हैं और उनका उत्तर पाने के लिये वचन को 'व' लिखा गया है।

मत्ती रचित सुसमाचार में यीशु के इस धरती के जीवन के बारे में लिखा गया है।

मत्ती एक यहूदी महसूल लेनेवाला व्यक्ति था। ए.डी. ३० में जब यीशु ने प्रचार करना शुरु किया तब से लेकर करीब ३ वर्ष बाद यीशु की मृत्यु तक मत्ती यीशु के साथ था। ए.डी. ३३ में जब कलीसिया की शुरुआत हुई तब यहूदियों में मत्ती पहला व्यक्ति था जो मसीही बना। हम अध्याय ३ से शुरु करेंगे।

अध्याय – ३

व.८ पश्चाताप करने (मन फिराने) का अर्थ क्या है?

व.१० आपके जीवन के कुछ अच्छे फलों के उदाहरण क्या हैं?

अध्याय – ४

व.१ शैतान का वर्णन तुम किस प्रकार करोगे?

व.४ जब यीशु परखे गए तब उन्होंने पवित्र शास्त्र का उपयोग कर शैतान को हराया। जब आप परखे जाते हो, तब क्या करते हो?

व.१९ शिष्य का एक खास उद्देश्य है। **'मनुष्यों के मछुवारे'** होने का अर्थ क्या है?

व.२० जब यीशु ने मछुवारों को अपने पीछे हो लेने को बुलाया, तब मछुवारों ने क्या उत्तर दिया?

अध्याय – ५

व.२१–२२ उन लोगों के नाम लिखो जिनके प्रति तुम्हारे दिल में क्रोध है या फिर अब भी उनके प्रति कडुवाहट है।

व.२८ वासना क्या है?

व.३० वो कौनसे पाप हैं जो आज आपको अपने जीवन से काटकर फेंकना है? (पाप क्या है जानने के लिये **गलातियों ५:१९–२१**, और **२तिमुथियुस १३:१–५** देखें)

अध्याय – ६

व.२० इस पृथ्वी पर तुम्हारा ख़जाना क्या है?

व.२४ कैसे आप परमेश्वर और धन दोनों की सेवा करते हो?

व.३३ परमेश्वर का राज्य क्या है?

अध्याय – ७

व.५ पिछले सप्ताह की ऐसी दो बातों का वर्णन करो जहां आप पाखंडी थे।

व.१३–१४ यदि परमेश्वर सभी से प्रेम करते हैं तो, उन तक पहूँचने का मार्ग संकरा क्यों है?

व.२४ अपना जीवन आपने किन स्तरों पर बनाया है?

अध्याय – ८

व.८ सुबेदार का विश्वास देखकर यीशु क्यों अचम्भित हुए? क्या आपके विश्वास को देखकर भी यीशु अचम्भित होंगे?

व.१८–२२ यीशु अपने चेलों से किस प्रकार का संकल्प चाहते हैं?

अध्याय – ९

व.१२ आप अपने आपको धार्मिक रुप से स्वस्थ समझते हैं या रोगी? क्यों?

व.१६–१७ आपको अपने स्वभाव में क्या बदलाव करना होगा ताकि आप **'नया मशक'** बन सकें?

व.३६ कौनसी बात आपको तकलीफदेय और असहाय महसूस कराती है?

अध्याय – १०

व.१६ अपने बारे में लोगों को सिखाने के लिये जब यीशु ने चेलों को भेजा तब उनसे ये क्यों कहा कि, सांपों की तरह बुध्दिमान और कबूतरों की तरह भोले बनो?

व.३६ यीशु ने कहा कि जब कोई उनके पीछे चलने का निर्णय लेगा तब उसका सबसे अधिक विरोध करने वाले उसके अपने परिवार के लोग ही होंगे। इसका क्या अर्थ है?

अध्याय – ११

व.१२ यीशु क्यों ऐसी भविष्यवाणी करते हैं कि, परमेश्वर के राज्य को बलवान ही छीन लेंगे?

व.२९ यीशु के दो चरित्र हैं, दीनता और कोमलता। क्या आप इनमें यीशु के समान हो?

अध्याय – १२

व.३४–३७ यीशु को आपके मन की बड़ी चिन्ता है। हमारे मन की परिस्थीती हमारे मुँह से निकले शब्दों से झलकती है। आपके मन का न्याय यीशु किस प्रकार करेंगे?

अध्याय – १३

व.१–९ अलग–अलग प्रकार की भूमि अलग–अलग प्रकार के दिल हैं।

व.४: मार्ग का किनारा – परमेश्वर के प्रति एक कठोर मन है।

व.५: पत्थरीली भूमी – यह एक भावुक मन है जो कभी–कभी परमेश्वर के लिये बहुत उत्साहित हो जाता है और दूसरे समयों में भूल जाता है।

व.७: झाड़ियों वाली भूमी – वह मन है जो परमेश्वर को जानना तो चाहता है, परन्तु संसार की चिन्ता और लोगों का डर उसे ऐसा करने से रोकता है।

व.८: अच्छी भूमी – यह ऐसा मन है जो परमेश्वर को जानने में लवलीन है और परमेश्वर को जानने में दूसरों की मदद करना चाहता है। आपका मन किस प्रकार का है? क्यों?

व.१४–१५ इस अनुछेद के अनुसार हमारे मन के साथ क्या कठिनाई है जो हमें पवित्र शास्त्र को समझने से रोकता है?

अध्याय – १४

व.१३–१६ अपने चेलों के साथ चलते समय यीशु उन्हें स्वार्थी न बनने के लिये लगातार चुनौती दे रहे थे। आप किन बातों में स्वार्थी हो?

व.२८–३३ पतरस क्यों डूबने लगा?

अध्याय – १५

व.८–९ आप परमेश्वर का आदर दिल से करने के बजाए अपने होठों से कैसे करते हो?

व.१७–१९ जब यीशु यह कहते हैं कि अशुध्द बातें हमारे दिल से निकलती हैं, तो इसका क्या अर्थ है? यह बातें हमारे दिलों में कैसे जाती हैं।

अध्याय – १६

व.१६ जीवित परमेश्वर का पुत्र – **'मसीह'** होने का क्या अर्थ है? क्या आपको यह विश्वास है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं?

व.२४ कैसे हमें अपने आप का इनकार करना चाहिये?

अध्याय – १७

व.२० चेले सारी सही बातें कर रहे थे लेकिन उनके मन में विश्वास की कमी थी। विश्वास करना क्यों जरुरी है?

अध्याय – १८

व.३ आपको कैसे बदलना होगा, ताकि आपका विश्वास एक बच्चे के समान हो सके?

व.१२–१३ यीशु के पास बाकी की ९९ भेड़ें थीं फिर भी उस एक खोए हुए भेड़ को पाकर यीशु क्यों खुश हुए?

व.३५ अपने दिल से किसी को क्षमा करने का अर्थ क्या है?

अध्याय – १९

व.२९ यीशु के पिछे चलने के लिये हमें कुछ चिजों का त्याग करना पड़ेगा। लेकिन यीशु यहाँ एक प्रतिज्ञा करते हैं। वह प्रतिज्ञा क्या है?

अध्याय – २०

व.१–१२ यीशु कहते हैं कि आप कब स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करते हैं यह बात कोई मायने नहीं रखता, आप सभी उतने ही खास हो। क्या आप इससे सहमत हो?

अध्याय – २१

व.२८–३० आप किस पुत्र के समान हो – पहले या दूसरे?

अध्याय – २२

व.१–१० परमेश्वर का राज्य शादी के दावत के समान है। ऐसी दावत में लोग क्यों नहीं आना चाहेंगे?

अध्याय – २३

व.२७–२८ छिपे पाप हमें बाहर से धार्मिक होने के भ्रम में डालते हैं लेकिन भीतर बुराई भरी रहती है। क्या ऐसे कुछ पाप हैं जो आपने किसी को नहीं बताए?

अध्याय – २४

व.१४ 'अन्त आएगा' इसका क्या अर्थ है?

व.४४ तैयार रहने के लिये तुम्हे क्या करना होगा?

अध्याय – २५

व.१–१३ इस दृष्टान्त की मूर्ख या बुध्दिमान कुंवारियों की तरह आप कैसे हैं?

व.२१ अपने गुणों का उपयोग परमेश्वर के लिये आप कैसे करोगे?

अध्याय – २६

व.३६–४५ यीशु को क्यों तीन बार जाकर प्रार्थना करनी पड़ी?

व.७५ पतरस फूट–फूटकर क्यों रोने लगा?

अध्याय – २७

व.२४ पिलातुस ने भीड़ के सामने हाथ क्यों धोए? उसके चरित्र में क्या कमजोरी थी?

व.४६ यीशु को ऐसा क्यों लगा जैसे परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया हो?

अध्याय – २८

व.५–७ पुनरुत्थान (मरे हुओं में से जी उठना) और पुनर्जन्म में क्या अंन्तर है?

व.१८–२० यीशु की आखरी आज्ञा अब हर उस व्यक्ति का उद्देश्य है जो मसीही बनता है। वह आज्ञा क्या है?